IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

साक्षात्कार :– तथ्य संकलन की एक प्रविधि के रूप में

श्रीमति दीपमाला उपाध्याय
शोध छात्रा
महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय,
अजमेर (राज.)
प्रवक्ता :– समाजशास्त्र विभाग
(बगरू पी.जी. महिला महाविद्यालय,
बगरू, जयपुर, राज.)

सार

साक्षात्कार मौखिक प्रश्न करना होता है अनुसंधान उपकरण (जववस) या आधार सामग्री संग्रह की विधि के रूप में साक्षात्कार, जहाँ तक इसकी तैयारी, रचना व क्रियान्वयन का सम्बन्ध है सामान्य साक्षात्कार करने से भिन्न होता है अंतर यह है कि अनुसंधान साक्षात्कार व्यवस्थित तरीके से तैयार किया जाता है और चलाया जाता है। विंघम और मूर ने साक्षात्कार को ''उद्देश्यपूर्ण वार्तालाप कहा है। अनुसंधान के क्षेत्र में स्वीकार करने के लिए यह परिभाषा अति विस्तृत है। सामाजिक अनुसंधान में अनेक विधियों का प्रयोग किया जाता है जैसे अवलोकन, अनुसूची, प्रश्नावली, पुस्तकालीय पद्धति, अनुमापन, समाजमिति, साक्षात्कार आदि में अपने प्रस्तुत अनुसंधान पत्र में तथ्य संकलन की प्रविधि के रूप में साक्षात्कार प्रविधि के बारे में बताना चाहती है। वर्तमान में साक्षात्कार अनुसंधानों में बढ़ती हुई तथ्य संकलन की प्रविधि है। इस शोध पत्र में साक्षात्कार, साक्षात्कार के प्रकार साक्षात्कार प्रक्रिया के चरणों के बारे में अपने विचार प्रस्तुत करना चाहती हूँ। इसमें संरचित साक्षात्कार व असंरचित साक्षात्कार के बारे में भी चर्चा की जायेगी व अन्य तथ्य संकलन की विधियों के साथ तुलनात्मक अध्ययनों के आधार पर बताया जायेगा कि साक्षात्कार अनुसंधानों में किस प्रकार उपयोगी विधि बनती जा रही है।

कीवर्ड – साक्षात्कार, संरचित, असंरचित, साक्षात्कार के प्रकार, साक्षात्कार कार्य।

1. प्रस्तावना –

किसी भी विज्ञान का विकास इस बात पर निर्भर होता है कि उसके अनुसंधान की विधियाँ तथा तथ्य संकलन के साधन कितने विकसित है। प्राकृतिक विज्ञानों में अनुसंधान की विधियाँ तथा उपकरण अत्यंत विकसित हो चुके है। सामाजिक विज्ञान जैसे समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, लोकप्रशासन आदि विज्ञान प्राकृतिक विज्ञानों की अपेक्षा इस क्षेत्र में काफी पीछे है।

गुडे व हाट लिखा है कि ''सामाजिक विज्ञानों की अध्ययन वस्तु मानव है। मानव स्वयं एक जटिल प्राणी है। जिसका स्वभाव निरन्तर बदलता रहता है, अध्ययन वस्तु एवं वैज्ञानिक दोनों मानव, मानव होने के कारण पक्षपात आदि की सम्भावना रहती है।

मानव में क्षमता है कि स्वयं के सम्बंध में मानव वैज्ञानिक द्वारा की गई भविष्यवाणी को गलत सिद्ध कर सके। इन सीमाओं के होते हुए भी कुछ और ऐसी विशेषताएँ है जिनकी वजह से सा. विज्ञान अनुसंधान में कुछ विशिष्ट तथ्य संकलन की पद्धतियों का प्रयोग करता है। जैसे अवलोकन, अनुसूची, प्रश्नावली, साक्षात्कार इत्यादि।

2. साक्षात्कार –

साक्षात्कार तथ्य संकलन की एक आत्मनिष्ठ विधि है। इस विधि द्वारा व्यक्ति को समस्याओं तथा गुणों का ज्ञान प्राप्त कराया जाता है। साक्षात्कार निर्देशन कार्य विधि का एक आवश्यक अंग है। यह परामर्श प्रक्रिया का हृदय माना जाता है। विद्यालयों में छात्रों के समक्ष अनेक समस्यायें उत्पन्न होती है। इन समस्याओं को समझने व उनके समाधान में छात्रों की सहायता करने के लिए साक्षात्कार महत्वपूर्ण विधि है। साक्षात्कार प्रणाली में वैज्ञानिक और उत्तरदाता दोनों आमने–सामने के सम्बंध है। साक्षात्कारकर्ता प्रश्न पूछता है तथा उत्तरदाता उनके उत्तर देता है। साक्षात्कारकर्ता का निरंतर यह प्रयास रहता है। सूचनादाता बराबर अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित अपने विचार व्यक्त करें।

पी. वी. यंग ने लिखा है कि :–''साक्षात्कार एक व्यवस्थित विधि मानी जा सकती है जिसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के आंतरिक जीवन में अधिक या कम कल्पनात्मक रूप में प्रवेश करता है जो उसके लिए सामान्यतया तुलनात्मक रूप से अपरिचित था।''

सिन पाओ यंग :–

''साक्षात्कार क्षेत्रीय कार्य की एक विधि है जिसका प्रयोग व्यक्ति या व्यक्तियों के व्यवहार को देखने कथनों को लिखने तथा सामाजिक या सामूहिक अन्तःक्रिया के वास्तविक परिणामों का निरीक्षण करने के लिए किया जाता है।''

निष्कर्षतः गुडे व हाट, हेडर व लिंडमैन और एम.एन. बसु के अनुसार साक्षात्कार पद्धति एक सामाजिक अन्तः क्रिया की प्रक्रिया है। जिसमें साक्षात्कारकर्ता और सूचनादाताओं ने परस्पर आमने–सामने के सम्बन्ध, किसी बिन्दु पर प्रश्नोत्तर करने के लिए स्थापित होते है।

3. साक्षात्कार के कार्य –

उत्तरदाता से प्राप्त जानकारी सामाजिक यथार्थ स्वभाव में अन्तदृष्टि प्रदान करती है चूंकि साक्षात्कारकर्ता कुछ समय उत्तरदाताओं के साथ व्यतीत करता है। इसलिए वह उनकी भावनाओं और दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से समझ सकता है जहां कहीं आवश्यक हो आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकता है।

साक्षात्कार समस्या के अज्ञात आयामों में अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है। ससुराल पक्ष तथा कार्यालय के सहयोगियों के द्वारा विधवाओं के शोषण की समस्या में पीड़ितों के साथ व्यक्तिगत साक्षात्कार ही साक्षात्कारकर्ता को यह जानने में मदद करता है कि सहायता व्यवस्था में विधवाओं की स्थिति क्या है? वह परम्परागत मूल्यों में कितनी बँधी रहती है। जिनसे उनका जीवन दुःखी होता है और समायोजन कठिन।

साक्षात्कार अध्ययन के लिए नवीन चरों को पहचानने तथा अवधारणात्मक स्पष्टता को निखारने के लिए प्रभावी अन्वेषणात्मक विधि सिद्ध हो सकता है। परीक्षण के लिए नवीन प्राकल्पनाओं पर भी विचार हो सकता है।

उदाहरणार्थ –

अर्न्तजातीय व अन्तर्सामुदायिक विवाह में पतियों व पत्नियाँ सामने आने वाली समस्याओं के अध्ययन में उनकी अभिवृत्तियों, विश्वासों और व्यवहार के स्वरूपों को काफी गहराई में खोजने पर समायोजन के विविध पक्षों के विषय में रोचक जानकारी का पता लग सकता है।

4. साक्षात्कार के प्रकार –

साक्षात्कार कई प्रकार के होते है जो संरचना, साक्षात्कार की भूमिका, साक्षात्कार में शामिल उत्तरदाताओं की संख्या आदि के संदर्भ में एक–दूसरे से भिन्न होते है। कुछ प्रकार के साक्षात्कार गुणवत्तात्मक व परिमाणात्मक दोनों प्रकार के अनुसंधानों में प्रयोग होते है।

1	2	3	4	5	6	7	8
संरचित बनाम असंरचित	मानकीकृत बनाम अमानकीकृत	वैयक्तिक बनाम समूह	स्वयं प्रबन्धित बनाम अन्य के द्वारा प्रबन्धित	अकेला बनाम पेनल	नरम बनाम कठोर	वैयक्तिक बनाम निर्वैयक्तिक	अन्य 1. केन्द्रित 2. दूरभाष 3. कम्प्यूटर द्वारा

(i) संरचित बनाम असंरचित –

असंरचित साक्षात्कार में प्रश्नों की शब्दावली में कोई विशिष्टताएँ नहीं होती है और ना ही प्रश्नों के क्रम में। साक्षात्कारकर्ता जब और जैसे प्रश्नों की आवश्यकता होती है वैसा बना लेता है। मार्गदर्शन के रूप में प्रस्तुत किये जाने के कारण इन साक्षात्कारों की बनावट लचीली होती है। सरल शब्दों में इस साक्षात्कार में सासक्षात्कारकर्ता के पास 1. मस्तिष्क में सामान्य प्रश्न ही होते है 2. विशेष मुद्दों के कोई विशेष पूर्व संकेत नहीं होते, जिन पर प्रश्न पूछे जाने है 3. किसी खास तरीके के प्रश्नों का क्रम नहीं होता, जिन पर प्रश्न पूछे जाने है। 4. साक्षात्कार जारी रखने की कोई समय सीमा नहीं होता। इस प्रकार जो कुछ एक उत्तरदाता से प्रारम्भ में पूछा गया है वह दूसरे से अन्त में और एक और उत्तरदाता से मध्य में पूछा जा सकता है।

इस प्रकार के असंरचित साक्षात्कार के लाभ है– 1. चूँकि प्रश्न लगातार पूछे जाते है इसलिए साक्षात्कार वार्तालाप के रूप में चलाया जा सकता है 2. अप्रतिबन्धित तरीके से अन्वेषण की अधिक सम्भावनाएँ हो जाती है 3. समस्या के विशेष पहलू में उत्तरदाता की रूचि को देखकर साक्षात्कारकर्ता उसी पर ध्यान केन्द्रित कर सकता है।

(ii) संरचित साक्षात्कार –

इस प्रकार के साक्षात्कार में अध्ययन विषय से सम्बन्धित कुछ प्रश्नों का पहले से ही निर्माण कर लिया और उन्हें एक व्यवस्थित क्रम में रख लिया जाता है। साक्षात्कारकर्ता इन प्रश्नों को सूचनादाता से पूछकर जानकारी प्राप्त करता है। प्रश्नों की इस सूची को साक्षात्कार अनुसूची कहते है। वास्तव में यह साक्षात्कारकर्ता द्वारा तैयार किए गए प्रश्नों का एक समूह है। यह साक्षात्कार अपने किसी भी अवयव के साथ किसी भी प्रकार के समायोजन की अनुमति नहीं देता है। जैसे विषय सामग्री, शब्द प्रयोग या प्रश्नों का क्रम। इस प्रकार के साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्ता से यह अपेक्षा की जाती है कि वह निरपेक्ष रहकर सभी उत्तरदाताओं को एक सा समझें। संरचित साक्षात्कार ''साक्षात्कार दिग्दर्शिका'' पर आधारित होता है।

इसका उद्देश्य यह है कि साक्षात्कारकर्ता के पूर्वाग्रह को कम से कम किया जा सकें और समस्त प्रक्रिया में अधिक से अधिक अनौपचारिकता आ सकें। इस प्रकार का साक्षात्कार परिमाणात्मक अनुसंधान में प्रयुक्त होता है।

इस साक्षात्कार में सभी आयाम अर्थात् –

- साक्षात्कार की व्यवस्था बताना
- प्रश्नों को व्यवस्थित करना
- उत्तरों की सीमा तय करना
- साक्षात्कारकर्ता और उत्तरदाता को नियंत्रित करना
- समस्या के पहलुओं के सीमांकन का नियमन हो जाता है।

(iii) मानकीकृत बनाम अमानकीकृत साक्षात्कार –

मानकीकृत साक्षात्कारों में प्रत्येक प्रश्न का उत्तर मानकीकृत होता है क्योंकि इस उद्देश्य के लिए दिए गए उत्तर वर्गों के समूह से निर्धारित होता है। उत्तरदाताओं को दिए हुए विकल्पों में से एक को उत्तर के रूप में चुनना होता है। उदाहरणार्थ हाँ/नहीं। मालूम नहीं। सहमत है अनपढ़/कम शिक्षित/उच्च शिक्षित/पक्ष में आदि विकलप हो सकते है।

अमानकीकृत साक्षात्कार वह है जिसमें उत्तरदाताओं पर ही छोड़ दिए जाते है। यह मुख्यतः गुणवत्तात्मक अनुसंधान में प्रयोग किया जाता है।

(iv) वैयक्तिक बनाम समूह साक्षात्कार –वैयक्तिक साक्षात्कार वह है जिसमें साक्षात्कारकर्ता एक समय में एक उत्तरदाता का साक्षात्कार लेता है जबकि समूह साक्षात्कार में एक साथ कई उत्तरदाताओं का साक्षात्कार लिया जाता है। समूह छोटा हो सकता है मान लें दो व्यक्तियों का (जैसे पति व पत्नी) या समूह बड़ा हो सकता है जैसे फैक्ट्री में काम कर रहे 20 मजदूर।

(v) अकेला बनाम पेनल साक्षात्कार –

अकेला साक्षात्कार वह है जिसमें साक्षात्कारकर्ता एक ही साक्षात्कार में समूची जानकारी एकत्र करता है। यद्यपि उस पर उत्तरदाता से अतिरिक्त जानकारी एकत्र करने के लिए पुनः जाने के लिए कोई प्रतिबन्धित नहीं होता है।

पेनल साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्ता बीच–2 में एक ही उत्तरदाता समूह से कई बार जानकारी एकत्र करता है यदि वही प्रश्न पूछे जाने के लिए समूह में भिन्न–2 उत्तरदाता शामिल किए जाते है तो इसको प्रवृति अध्ययन कहा जाता है।

(vi) नरम बनाम कठोर साक्षात्कार –

नरम साक्षात्कार में यद्यपि साक्षात्कारकर्ता की स्थिति द्वैतीयक होती है जहाँ तक आधार सामग्री संग्रह की बात है लेकिन वह उत्तरदाताओं पर दबाव डाले बिना मार्ग दर्शन करता है। यहाँ उत्तरदाता को फ्री रखा जाता है चर्चा के लिए।

कठोर साक्षात्कार में साक्षात्कार पुलिस की पूछताछ के समान होती है। साक्षात्कारकर्ता प्राप्त उत्तरों की वैधता तथा पूर्णता पर प्रश्न करता है अक्सर उत्तरदाताओं को झूंठ ना बोलने की चेतावनी दी जाती है जब वे संकोच करें तो उत्तर के लिए उन्हें बाध्य करता है।

(vii) वैयक्तिक बनाम निर्यैव्यक्तिक साक्षात्कार –

वैयक्तिक साक्षात्कार वह है जो साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्ता और उत्तरदाता में आमने–सामने सम्पर्क होता है। निर्वैयक्तिक साक्षात्कार में आमने सामने के सम्बन्ध नहीं होते। लेकिन जानकारी टेलीफोन, कम्प्यूटर अथवा अन्य किसी माध्यम द्वारा एकत्र की जाती है।

(viii) अन्य प्रकार

(A) केन्द्रित साक्षात्कार –

यह साक्षात्कार मर्टन और उनके साथियों द्वारा प्रयुक्त व परिभाषित किया गया है। उन्होंने अपने लेख में इस पर काफी चर्चा की है। उनके अनुसार केन्द्रित साक्षात्कार का ध्यान केन्द्रित करना है। केन्द्रित साक्षात्कार वह है जो एक विशेष विषय पर केन्द्रित होता है। इसमें सभी उत्तरदाताओं को एक सा अनुभव दिया जाता है। उदाहरणार्थ, दंगे के समय उपस्थित सभी लोगों से पूछा जाता कि उस स्थिति से सम्बन्ध उनके साझा अनुभव क्या रहे है। इस प्रकार यह साक्षात्कार सहभागियों के वास्तविक अनुभवों के प्रभाव पर केन्द्रित रहता है जैसे उदाहरण – उत्तरदाताओं से विशेष फ़िल्म, विशेष पुस्तक, व्यक्तित्व, विशेष कार्यक्रम आदि पर प्रश्न पूछना।

(B) टेलीफोन साक्षात्कार –

पश्चिमी समाजों में इस प्रकार का साक्षात्कार सामान्य होता है लेकिन भारत में नहीं फिर भी यह अब शहरी क्षेत्रों में प्रचलित हो रहा है। समाचार पत्र, रेडियो, टी.वी., कार्मिक इस विधि को महत्वपूर्ण मामलों में आम राय जानने के लिए अधिक प्रयोग किया जाता है। जैसे बजट पर प्रतिक्रिया, चुनाव नतीजों पर राय, रसोई गैस की कीमतों में अचानक वृद्धि, शहर में साम्प्रदायिक दंगे आदि कोरोना काल में जहाँ आना–जाना व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करना कठिन हो गया था। वहां यही साक्षाकार काफी उपयोगी हो गया।

भारत में साक्षात्कार का यह तरीका बहुत ज्यादा नहीं चल सकता क्योंकि यहाँ टेलीफोन धारकों की संख्या कम है, उत्तरदाता टेलीफोन साक्षात्कार में कम रूचि लेता है, टेलीफोन से प्राप्त जानकारी पर्याप्त नहीं है। इन कारणों से इसका प्रयोग अपेक्षाकृत कम किया जाता है।

(C) कम्प्यूटर साक्षात्कार –

यह साक्षात्कार कम्प्यूटर की सहायता से लिया जाता है। भारत में यह केवल वे ही लोग ले सकते है जिनके पास कम्प्यूटर और इंटरनेट सुविधा के साथ बहुत कम लोगों के पास कम्प्यूटर है।

4. सफल साक्षात्कार के लिए शर्ते –

साक्षात्कार की सफलता भी आवश्यक है अगर साक्षात्कार सफल नहीं होगा तो अध्ययन में वस्तुनिष्ठता नहीं आयेगी। साक्षात्कार विधि के द्वारा आधार सामग्री एकत्र करना सरल हो जाता है। फिर भी इसकी विश्वसनीयता और वैधता प्रमुख समस्याएँ खड़ी करती है।

सफल साक्षात्कार की शर्तें क्या होनी चाहिए। लिण्डजे गार्डनर (संग्रह 2, 1965:535–37) में तीन शर्तें बताई है।

1. पहुँच 2. समझना 3. प्रेरणा

सफल साक्षात्कार के लिए नॉडल

उत्तरदाताओं की विशेषताएँ

1. आधार सामग्री
2. प्रेरणा

साक्षात्कार के गुण

1. कुशलता
2. दक्षता

उच्च परिणाम	निम्न परिणाम		उच्च परिणाम	निम्न परिणाम
– सर्वेक्षक की पसंद – साक्षात्कारकर्ता के प्रति पंसद – अनुसंधान की प्रतिष्ठा – स्वछवि	– अनुसंधान के प्रति अरूचि – साक्षात्कारकर्ता के प्रति नापसंद		– प्रतिबद्धता – प्रशिक्षण – ईमानदारी – कुशल पर्यवेक्षण	– रूचि में कमी – प्रशिक्षण में कमी

निष्कर्ष :–

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में साक्षात्कार तथ्य संकलन की विधियों में महत्वपूर्ण प्रविधि है। वर्तमान में विविध प्रकार के व्यवहार प्रतिमानों के अध्ययन के लिए साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया जा रहा है। यही नहीं संरचित व असंरचित साक्षात्कार के माध्यमों से देश–विदेश में कई शोध कार्य किये जा रहे है। अन्य प्रविधियों की तुलना में सामग्री संकलन के लिए साक्षात्कार प्रक्रिया का महत्व अधिक है। क्योंकि अनेक गुणात्मक तथ्यों तथा व्यक्ति के विचाराभावों व मनोवृतियों को साक्षात्कार द्वारा भली–भाँति समझा जा सकता है। मैंने अपने प्रस्तुत पत्र में साक्षात्कार, संरचित व असरंचित साक्षात्कार को समझाने का प्रयास किया है। वर्तमान में बढ रहे टेलीफोन साक्षात्कार के बारे में चर्चा की है। एक अच्छे साक्षात्कार की शर्ते साक्षात्कार के आयोजन में उपयोगी है। अनुसंधान की वस्तुनिष्ठा इस बात पर निर्भर करती है कि

आपकी तथ्य संकलन प्रविधि का चुनाव किस प्रकार किया है? वर्तमान में यथार्थ अध्ययन व वैज्ञानिक परिणाम प्राप्त करने के लिए साक्षात्कार एक अच्छी प्रविधि है।

संदर्भ ग्रन्थ –

- Black, J.A. and D.J. Champion, Methods and Issues in Social Research, John Wiley & Sons, New York, 1976
- Bailey Kenneth D., Methods of Social Research (2nd ed) The Free Press, London 1982
- Gardner, Lindzey and Elliot Aronson, Hand Book of Social Ps
- Moser, CA and Ralton, Survey methods in Social Investigation (2nd ed), The English Language Book Society, London, 1980
- Sarantatokes, Social Research (2nd ed), Macmillan Press, 1998
- Singleton R.A. and B.C. Stoaints, Approaches to Social Research (3rd ed.) Oxford University Press, New York 1999
- आहुजा, राम सामाजिक सर्वेक्षण एवं अनुसंधान, रावत पब्लिकेशन्स
- डॉ. एम.एम. लवानिया शशी के. जैन, समाजशास्त्रीय अनुसंधान तर्क व विधियाँ, रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर
- डॉ. ऋषि कुमार शर्मा, 2012, सामाजिक अनुसंधान अन्वेषण में सर्वेक्षण विधियाँ, आदित्य पब्लिशिंग हाऊस
- डॉ. आर.एन. त्रिवेदी व डॉ. डी.पी. शुक्ला, रिसर्च मैथ्डोलॉजी, कॉलेज बुक डिपो
- वीरेन्द्र प्रकाश शर्मा, सामाजिक अनुसंधान की पद्धतियाँ, पंचशील प्रकाशन, जयपुर